डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, अक्टूबर(सितम्बर–अक्टूबर संयुक्तांक)2021

वर्षः 04, अंकः 11–12

गांधी एवं शास्त्री के विचार आज भी प्रासगिंक हैंः वित्त अधिकारी 03

अयोध्या दीपोत्सव एक वैश्विक प्रतीक बन गया है : कुलपति 04

आजादी का अमृत महोत्सव समृद्धि व विकास का नया मार्ग प्रशस्त करेगाः कुलपति

अयोध्या। 75 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में कोविड प्रोटोकॉल के तहत भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में संबोधित करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि आज से ही आजादी का अमृत महोत्सव भी मनाया जा रहा है जो पूरे वर्ष चलता रहेगा। अमृत महोत्सव हम सभी के लिए समृद्धि एवं विकास का नया मार्ग प्रशस्त करेगा। कुलपति ने कहा कि देश को आजादी दिलाने में हमारे वीर सपूतों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने प्राण न्योछावर किए हैं। आज हम सभी वीर सपूतों को शत–शत नमन करते हैं।

कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस एक राष्ट्रीय पर्व है। सभी भारतवासी किसी न किसी जाति, संप्रदाय से है परन्तु सभी इस पर्व को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। कुलपति ने शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कहा कि आज के दिन हम सभी को अपने कार्यों की समीक्षा करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त भविष्य की योजनाएं बनानी चाहिए।

सम्बोधन के पूर्व कुलपति प्रो0 सिंह द्वारा सभी को शपथ दिलाई गई। प्रो0 सिंह ने परिसर स्थित डॉ0 राममनोहर लोहिया, सरदार पटेल एवं महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। कुलपति ने प्रशासनिक भवन में ध्वजारोहण कर एनसीसी कैडेटों की सलामी ली। मुख्य परिसर में ध्वजारोहण के पूर्व कैम्प कार्यालय एवं नवीन परिसर में भी कुलपति प्रो0 सिंह द्वारा झंडारोहण किया गया।

कार्यक्रम में डोगरा रेजीमेंट की बैंड पार्टी ने राष्ट्रीय धुन पर संगीतमयी प्रस्तुति कर सभी को राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कुलसचिव उमानाथ, वित्त अधिकारी प्रो0 चयन कुमार मिश्र, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, सहायक कुलसचिव डॉ0 रीमा श्रीवास्तव सहित बड़ी संख्या में शिक्षकगण, अधिकारी गण, कर्मचारीगण एवं परिसर के विभागों के छात्र–छात्राओं की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

कम्प्यूटिंग साइंस के बिना गुणवत्तापरक शोध संभव नहीं : प्रो0 त्रिपाठी

29 अगस्त। अवध विश्वविद्यालय के गणित एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा 'गणित एवं कम्प्यूटिंग साइंस के अद्यतन स्वरूप' विषय पर तीन दिवसीय(27–29 अगस्त) अन्तर्राष्ट्रीय ई–कॉन्फ्रेंस आयोजित किया गया।

शुभारम्भ के अवसर पर कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि बफलो यूनिवर्सिटी, न्यूयॉर्क के कुलपति प्रो0 सतीश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि आजकल कम्प्यूटिंग साइंस के बिना किसी भी क्षेत्र में गुणवत्तापरक शोध संभव नहीं है, इसमें विभिन्न प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जाता है जिसमें मैथमेटिकल मॉडलिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रिग्रेशन एनालिसिस, मशीन लर्निंग, आदि का अनुप्रयोग कर गणित एवं कम्प्यूटेशनल विज्ञान को अत्यंत समृद्ध किया गया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि वर्तमान परिवेश में गणित का बड़ा महत्व है। इसके बिना किसी भी विषय का वैज्ञानिक एवं सटीक अध्ययन सम्भव नहीं है। कुलपति ने कहा कि बिजनेस एनालिटिक्स में गणित विषय किस प्रकार उपयोगी है। विषय पर विस्तृत चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इस कांफ्रेंस में अंतरराष्ट्रीय विद्वानों को आमंत्रित कर उनके अनुभव तथा अनुभूति से गणितीय ज्ञान के तथ्यों को जानने एवं समझने में मदद मिलेगी। विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को गणित एवं कम्प्यूटिंग साइंस के शोध से शिक्षण की गुणवत्ता में बढ़ोतरी करने में सहायता मिलेगी। कुलपति प्रो0 सिंह ने भविष्य में ऐसे कार्यक्रमों को आयोजित किये जाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

कांफ्रेंस के टेक्निकल सत्र में नामीबिया विश्वविद्यालय के गणित एवं सांख्यिकी विभाग के प्रो0 राकेश कुमार ने "क्यूइंग मॉडल एवं उनके अनुप्रयोग" पर अपना आमंत्रित व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि प्रत्येक संस्थान में सेवाओं के लिए एक वेटिंग लाइन का निर्माण हो जाता है। गणित एवं सांख्यिकी क्षेत्र के अंतर्गत वेटिंग लाइन के सिद्धांत का प्रतिपादन कर गहनता के साथ अध्ययन किया जाता है जो वर्तमान के अद्यतन शोधों में से एक है।

मैरीलैंड विश्वविद्यालय, अमेरिका के प्रो0 जी0 एस0 हूरा ने कहा कि गणित में बिग डेटा एनालिटिक्स का प्रयोग व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। इससे कई सूचनाओं को एक साथ लाया जा सकता है। शोध के क्षेत्र में इसका काफी उपयोग किया जा रहा है। इसके टूल्स डेटा संग्रहण में उपयोगी सिद्ध हो रहे है।

कार्यक्रम के संयोजक एवं गणित एवं सांख्यिकी विभागाध्यक्ष प्रो0 एस0एस0 मिश्र ने अतिथियों का स्वागत करते हुए तीन दिवसीय चलने वाली अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस के कार्यक्रमों के बारे में बताया। प्रो0 मिश्र ने बताया कि कॉन्फ्रेंस में नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर के प्रो0 केरल हग्रीव्स, काठमांडू विश्वविद्यालय नेपाल के प्रो0 आर0 पी0 घिमिरे, जर्मनी के प्रो0 स्टीफन ने आमंत्रित व्याख्यान दिया। इसमें एक दर्जन से ज्यादा शोध–पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया गया। कार्यक्रम में विज्ञान एवं इंजीनियरिंग संकायाध्यक्ष प्रो0 सी0के0 मिश्र ने ई–कांफ्रेंस में शामिल हुए अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रो0 एस0के0 रायजादा द्वारा अतिथियों का परिचय कराया गया।

कार्यक्रम का संचालन विभाग के शोध छात्र संदीप रावत द्वारा किया गया। इस अवसर पर आयोजन सचिव डॉ0 अभिषेक सिंह, डॉ0 संजीव कुमार सिंह, डॉ0 मनोज कुमार, सघर्ष सिंह, शालिनी, अनामिका सहित 150 से अधिक प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन

5 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि अयोध्या के सासंद श्री लल्लू सिंह एवं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने उत्तर प्रदेश शासन के निर्देश के क्रम में जिले के विश्वविद्यालय, राजकीय महाविद्यालय, अशासकीय महाविद्यालय, स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के 75 शिक्षकों को उनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे विशेष कार्य एवं योगदान के लिए सम्मान पत्र एवं अंगवस्त्रम् भेंटकर सम्मानित किया।

इस अवसर सासंद लल्लू सिंह ने कहा कि इस देश में आदिकाल से गुरू का विशेष महत्व रहा है। गुरू शिक्षा के साथ समाज में संस्कार देने का कार्य करता रहा है। शिक्षकों को जो सम्मान एवं आदर मिलना चाहिए वह नहीं मिल पा रहा है। संस्कार के अभाव के कारण उनके प्रति श्रद्धा में कमी आई है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा इस प्रकार के समारोह शिक्षकों के प्रति सम्मान को प्रदर्शित करते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुल. पति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि आज पूरा राष्ट्र शिक्षक दिवस मना रहा है। हम सभी के लिए यह गौरव का दिन है। शिक्षक दिवस देश के प्रथम उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन पर मनाते हैं। समस्त शिक्षकों के लिए यह गौरव का दिन है। जो शिक्षक इस वर्ष सम्मानित नहीं हो पाये है, आने वाले वर्षों में उनके योगदान के लिए अवश्य सम्मानित किया जायेगा। कार्यक्रम, नोडल अधिकारी डॉ0 सुनीता अवस्थी, प्राचार्य गौतमबुद्ध राजकीय महाविद्यालय अयोध्या के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. निलय तिवारी ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ, जिलाधिकारी के प्रतिनिधि के रूप में उपजिलाधिकारी अरविंद त्रिपाठी, उपकुलसचिव विनय कुमार सिंह, सहायक कुलसचिव मो0 सहिल सहित अतिथिगण उपस्थित रहे।

आधी आबादी को हर तरह से सशक्त बनाना जरूरीः कुलपति

28 अगस्त । अवध विश्वविद्यालय में मिशन शक्ति अभियान फेज–थ्री के तहत महिला अध्ययन केंद्र एवं वीमेन ग्रीवेंस सेल द्वारा 'उद्यमिता विकास एवं जागरूकता' अभियान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश में रोजगार के अवसर को सृजन करने में महिला उद्यमियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। महिलाओं की भागीदारी देश के विकास में अहम भूमिका निभाएगी। सशक्त एवं आत्मनिर्भर महिलाओं को देखकर अन्य को भी प्रेरणा मिलेगी। देश की आधी आबादी को हर तरह से सशक्त बनाना जरूरी है। कुलपति ने कहा कि इतिहास पर दृष्टि डालें तो देश के महानगरों में ही नहीं, गांवों–कस्बों में भी महिलाओं ने आत्मनिर्भर होने की दिशा में घरेलू उद्योग जैसे पापड़, अचार तैयार करने का कार्य प्रारम्भ किया है। महिलाओं द्वारा संचालित छोटे–छोटे उद्यमों में परंपरागत हस्तशिल्प और कढ़ाई–बुनाई की चीजें देश ही नहीं, विदेशों में भी खूब पसंद की जा रही हैं। कुलपति ने कहा कि नवाचार उद्यमिता की क्षमता और योग्यता को सिद्ध कर रही है। महिला उद्यमियों को आगे लाने के लिए केवल आर्थिक मदद या सुविधाएं ही पर्याप्त नहीं होगी। समग्र रूप से सामाजिक और पारिवारिक सोच में बदलाव कर स्वस्थ मानसिकता का परिचय देना होगा।

मंथन

15 अक्टूबर 2021: आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, दशमी, विक्रम संवत् 2078

' क्रोध ऐसी आंधी है जो विवेक को नष्ट कर देती है '

वैश्विक समस्या है पर्यावरण प्रदूषण

पर्यावरण प्रदूषण वैश्विक और जटिल समस्या है। भारत में भी वायु, जल, और मिटटी का प्रदूषण सर चढ़कर बोल रहा है। भारत में बड़ी–बड़ी सड़कों का निर्माण करने की वजह से वृक्षों को नियमित रूप से काटा जा रहा है। बड़े–बड़े शहरों जैसे दिल्ली, मुंबई और कोलकाता में भारी मात्रा में वायु और जल प्रदूषण के नतीजे मिल रहे हैं। दिल्ली प्रदूषण के मामले में सबसे ऊपर है। विश्व गांव और विकास के नाम पर फैलाई गई गंदगी का प्रभाव अब स्थानीय नहीं बल्कि वैश्विक हो गया है। अविकसित या अर्द्धविकसित राष्ट्र ज्यादा औद्योगीकरण किए बिना भी प्रदूषण के शिकार हैं। पर्यावरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय चेतना के बावजूद आज भी अविकसित या अल्पविकसित देशों की बहुत बड़ी जनसंख्या कम आबादी वाले औद्योगीकृत राष्ट्रों द्वारा फैलाए जा रहे वायुमंडलीय या भूमि प्रदूषण की सजा भोगने को अभिशप्त है। जो भी हो, विकसित देशों पर दोषारोपण कर अविकसित राष्ट्र भी अपनी जिम्मेदारियों से बच नहीं सकते। पर्यावरण की सुरक्षा से ही प्रदूषण की समस्या को सुलझाया जा सकता है। यदि हम अपने पर्यावरण को ही असुरक्षित कर देंगे, तो हमारी रक्षा कौन करेगा? इस समस्या पर यदि हम आज मंथन नहीं करेंगे, तो प्रकृति संतुलन स्थापित करने के लिए स्वयं कोई भयंकर कदम उठाएगी और हम मनुष्यों की शक्ति के बाहर की बात होगी। प्रदूषण से बचने के लिए हमें अत्यधिक पेड़ लगाने होंगे। प्रकृति में मौजूद प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन रोकना होगा। हमें प्लास्टिक की चीजों के इस्तेमाल से परहेज करना होगा। कूड़े–कचरे को इधर–उधर न फेंकें। वर्षा के जल का संचय करते हुए भूमिगत जल को संरक्षित करने का प्रयास करें। पेट्रोल, डीजल, बिजली के अलावा हमें ऊर्जा के अन्य स्रोतों से भी ऊर्जा के विकल्प ढूंढने होंगे। सौर ऊर्जा व पवन ऊर्जा के प्रयोग पर बल देना होगा। अनावश्यक एवं अनुपयोगी ध्वनियों पर रोक लगानी होगी। तकनीक के क्षेत्र में नित्य नए–नए प्रयोग व परीक्षण हो रहे हैं, हमें उनको सही ढंग से अपनाना है ताकि प्रदूषण न फैले। सब से अहम बात यह है कि हमें मनुष्यों को बचाने के लिए सकारात्मक सोच रखनी होगी तथा निःस्वार्थ होकर पर्यावरण–प्रदूषण से बचने के लिए कार्य करना होगा।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

शेखर भारती

भारत विभिन्न भाषा वाला देश है। यहां लगभग 23 प्रकार की भाषाएं बोली जाती है। इतनी भाषाओं के बावजूद भारत में हिंदी बोलने व समझने वालों की संख्या अधिक है। हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी भारत की राज भाषा है। हिन्दी देश की अधिसंख्य जन की मातृभाषा है।

हिंदी भाषा के विकास और समृद्ध एवं प्रभावशाली बनाने के लिए 1953 में हिंदी दिवस की शुरुआत हुई, और तब से हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। 14 सितंबर 1949 में संविधान सभा ने यह निर्णय लिया कि हिंदी केंद्र सरकार की अधिकारिक भाषा के रूप में होगी। यह निर्णय भारत में अधिकतर क्षेत्रों में ज्यादातर हिंदी भाषा बोली जाने के कारण हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया, और इसके महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिंदी को प्रत्येक क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए हिंदी दिवस मनाया जाने लगा। हिंदी के विकास एवं अधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित कराने के लिए हजारी प्रसाद द्विवेदी, काका कालेलकर सहित अन्य साहित्यकारों ने अथक प्रयास किए।

हिंदी के विषय में महात्मा गांधी ने कहा है कि हिंदी जनमानस की भाषा है। उन्होंने वर्ष 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने को कहा और 1949 में हिंदी भाषा को आखिर में राजभाषा का दर्जा मिला। हिंदी भाषा

का राजभाषा के रूप में चुना जाना और लागू किये जाने पर अ–हिंदी भाषी राज्य इसका विरोध करने लगे और फलस्वरुप अंग्रेजी को नियत समय के लिए राजकाज के लिए मान्यता देना पड़ा, जिसका प्रभाव यह हुआ कि आज हिंदी में भी अंग्रेजी का गहरा प्रभाव है। परिणाम स्वरूप हिंदी को प्रोत्साहन और प्रभावशाली बनाना आवश्यक हो गया।

हिन्दी दिवस के अवसर पर लोगों को प्रेरित करने के लिए भाषा सम्मान की शुरुआत की गई और यह सम्मान उन लोगों को दिया जाता है जिन्होंने हिंदी भाषा के उत्थान के लिए विशेष योगदान दिया होता है। हिंदी दिवस को एक मात्र दिन होने के कारण लोग इसे भूल ना जाए इसीलिए हिंदी राष्ट्र सप्ताह का भी आयोजन होता है। हिंदी दिवस का मुख्य उद्देश्य हिंदी का उत्थान एवं समृद्ध करना है। जिसके लिए सरकार विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कराती है। लोगों और सरकार के उदासीन रवैये से हिंदी को समुचित स्थान नहीं मिला है। हिंदी को आज तक संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा नहीं बनाया जा सका है। इसे विडंबना ही कहेंगे कि योग को 177 देशों का समर्थन मिला लेकिन हिंदी के लिए 129 देशों का समर्थन जुटाया नहीं जा सका।

वर्तमान में हिंदी सरकारी कार्य की तरह एक दिन या एक सप्ताह मात्र तक सिमट कर रह गई है। डॉ0 राजेंद्र प्रसाद ने कहा है कि ' जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है वह उन्नत नहीं हो सकता', अतः हमें अब जागरूक होकर हिंदी के प्रति अहम कदम उठाने की जरूरत है। जिससे हिंदी भाषा का भविष्य उज्ज्वल हो सके।

सभ्य समाज के लिए जरूरी है साक्षरता

कृष्ण गोपाल चतुर्वेदी

साक्षरता का मतबल शिक्षित होना या पढना –लिखना ही नहीं है, बल्कि यह लोगों में उनके नैतिक मूल्यों और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता का प्रसार कर, सामाजिक विकास का सुगम आधार बन सकती है। गरीबी उन्मूलन में भी इसका सर्वाधिक प्रयोजनपरक योगदान हो सकता है। महिलाओं एवं पुरुषों के बीच समानता के लिए जरूरी है कि महिलाएं भी साक्षर बनें जिससे कि देश के सर्वांगीण विकास में महिलाओं की भूमिका सराहनीय हो सके। जीवन सफलता और बेहतर जीने के लिये भोजन की तरह ही साक्षरता भी महत्वपूर्ण है। साथ ही यह गरीबी उन्मूलन, बाल मृत्यु दर को कम करने, जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने, लैंगिक समानता की प्राप्ति आदि के लिए भी आवश्यक है। एक व्यक्ति का शिक्षित होना उसके स्वयं का विकास है, वहीं एक बालिका शिक्षित होकर पूरे घर को संवार सकती है।

विश्व भर में शिक्षा के महत्व को प्रतिष्ठित करने और निरक्षरता को धरा से मुक्त करने के उद्देश्य से 17 नवंबर 1965 को यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक वर्ष 8 सितंबर को विश्व साक्षरता दिवस के रूप में मनाया जाएगा। पहला अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस 1966 में मनाया गया था और अब यह दिवस प्रतिवर्ष आयोजित किया जा रहा है। इसी के साथ वर्ष 2003–2012 को संयुक्त राष्ट्र साक्षरता दशक घोषित किया गया। वर्ष 2021 के लिये अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस की थीम 'मानव–केंद्रित रिकवरी हेतु साक्षरताः डिजिटल डिवाइड को कम करना' है। यह थीम सभी को शामिल करते हुए प्रौद्योगिकी–सक्षम साक्षरता को बढ़ावा देने के अवसरों पर केंद्रित है। शिक्षा जगत में आमूल चूल परिवर्तन के लिए बरसों से प्रयास किया जा रहा है लेकिन वास्तव में अगर देखा जाए तो इसके प्रति लोगों का उत्साह पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। विश्व साक्षरता दिवस पर सभी को साक्षर बनाने का संकल्प लिया जाता है। सही मायने में विश्व साक्षरता दिवस शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने और लोगों का ध्यान शिक्षा की तरफ आकर्षित करने के साथ ही सही शिक्षा का संस्कार देना भी है। शिक्षा की अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभा रहे शिक्षण संस्थानों एवं कोचिंग इंस्टीट्यूट को चाहिए कि वे शिक्षा को मात्र व्यवसायिक साधन ना बनाएं बल्कि सही और योग्य संस्कारों वाले समाज का निर्माण करने में अहम भूमिका निभाए।

सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां...

शिवम पाण्डेय

''दुनिया एक किताब है और जो लोग यात्रा नहीं करते वे सिर्फ इसका एक ही पृष्ठ पढ़ पाते हैं।'' संत ऑगस्टीन का यह वाक्य पर्यटन की बहुआयामी महत्ता को आलोकित करने में सर्वथा सक्षम सिद्ध होता है। पर्यटन का वर्तमान जितना पुष्पित, पल्लवित है, अतीत भी उतना ही संपन्न था। पर्यटन स्वयं में लंबा इतिहास समेटे हुए है। भारत 'भूमि' के बुद्ध, उनके अनुनायी अशोक जिन्होंने भारत समेत श्रीलंका, चीन एवं कंबोडिया जैसे राष्ट्रों में बौद्ध धर्म को प्रतिष्ठित किया। जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी ने पर्यटन का प्रयोग 'सेतु ' के तौर पर किया। गमनागमन की इस प्रक्रिया में विदेशी यात्रियों की सक्रियता भी उल्लेखनीय है।

चंद्रगुप्त के शासनकाल में भारत भ्रमण करने वाले 'इंडिका' के लेखक मेगास्थनीज हों या चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन प्रणाली में वस्तु विनिमय के प्रयोग को उजागर करने वाले फाह्यान, सभी के जीवन काल में पर्यटन केंद्र में रहा है। यायावरी के स्वतंत्र हस्ताक्षर, बहुभाषाविद, एवं 140 से अधिक ग्रंथों के रचयिता महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने 'घुमक्कड़ धर्म' को सर्वश्रेष्ठ धर्म माना है।

पर्यटन केवल मानसिक सुख प्रदान नहीं करता अपितु व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं अध्यात्मिक विकास में भी सहायक होता है। पर्यटन के माध्यम से संस्कृ –तियों को बढ़ावा मिलता है। विभिन्न देश, धर्म व समुदायों को एक–दूसरे की संस्कृति से परिचित होने का अवसर मिलता है। पर्यटन की इन्हीं विशेषताओं के चलते 27 सितंबर को वैश्विक स्तर पर विश्व पर्यटन दिवस मनाया जाता है। पर्यटन वर्तमान में 6.23 प्रतिशत जी0डी0पी0 के साथ सबसे बड़े सेवा उद्योग के रूप में है। वर्ष 2019 के आंकड़ों के अनुसार आगंतुकों द्वारा किया जाने वाले खर्च 1.5 ट्रिलियन था, वहीं वैश्विक व्यापार में पर्यटन उद्योग का योगदान 7 प्रतिशत का था। भारत में पर्यटन उद्योग ने 42 मिलियन रोजगार मुहैया कराया, जिसमें महिलाएं एवं वंचित तबके भी शामिल हैं। आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2028 तक जी0डी0पी0 में 9.23 प्रतिशत हिस्सेदारी वाला पर्यटन उद्योग भारत को विश्व में पांचवें स्थान से तीसरे पायदान पर लाने में सक्षम होगा। पर्यटन की दृष्टि से भारत बेहद खास है, अकेले भारत में 38 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल मौजूद हैं।

वर्तमान समय में भारत के संदर्भ में पर्यटन क्षेत्र के अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाने की वजह, वीजा प्रक्रिया की जटिलता, स्वच्छता की कमी, विदेशी यात्रियों के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की अनुपलब्धता, बुनियादी कौशल की कमी, जागरूकता का अभाव एवं असुरक्षा की भावना जैसी समस्याएं शामिल हैं। उपरोक्त समस्याओं का निवारण अत्यावश्यक है। समय–समय पर सरकार द्वारा सराहनीय कदम उठाए जाते हैं, वर्ष 2002 की 'अतुल्य भारत' योजना को इसके उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है, जिसके अंतर्गत पर्यटन में चिकित्सीय, आध्यात्मिक एवं योग विद्या जैसे विषयों के विकास को लक्षित किया गया है।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति विश्वविद्यालय की समग्र गतिविधियों का आईना है। अमृत महोत्सव, ओलम्पिक और जनसंख्या दिवस पर लेख ज्ञानपरक और रूचिपूर्ण रहे।

– शशांक पाठक

सुविचार

''तपस्या धर्म का पहला और आखिरी कदम है।''

– महात्मा गांधी

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी,
समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादकीय मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
संकलन एवं सम्पादन
शशांक, अंशुमान, बलराम

avadhabhivyakti@gmail.com

Feedback

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

गांधी एवं शास्त्री के विचार आज भी प्रासगिंक हैंः वित्त अधिकारी

02 अक्टूबर। अवध विश्वविद्यालय के सरदार पटेल प्रशासनिक भवन के प्रांगण में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री की जयंती मनाई गई। कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के निर्देश पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में वित्त अधिकारी प्रो0 चयन कुमार मिश्र ने कहा कि गांधी एवं शास्त्री के विचार आज भी प्रासगिंक है। उनके विचारों को जीवन में अपनाते हुए आगे बढ़ें। कुलसचिव उमानाथ ने कहा कि इन दोनों महापुरुषों के बताये हुए पदचिन्हों पर आगे चलें, यहीं हम सभी का सद्प्रयास होगा। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने कहा कि गांधी एवं शास्त्री के बताये हुए मार्ग पर चलने से जीवन का लक्ष्य सार्थक होगा। मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने कहा कि गांधी जी सभी के लिए सदैव प्रासगिंक रहेंगे। स्वच्छता उनका प्रथम ध्येय रहा है। इसे अपने जीवन में अपनाने की जरूरत है। वहीं लाल बहादुर शास्त्री सादगी के प्रतिमूर्ति थे। उनकी सादगी का आज भी देश कायल है। प्रो0 सिंह ने कहा कि इन दोनों महा–पुरूषों के विचार एवं सिद्धांत अपनाने की जरूरत है। गणित एवं सांख्यिकी विभागाध्यक्ष प्रो0 एस0एस0 मिश्र ने कहा कि गांधी एवं शास्त्री को देश कभी भुला नहीं पायेगा। गांधी जी की देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अलग पहचान थी। उनके विचार आज भी मार्ग प्रशस्त करते है। इसके साथ ही लाल बहादुर शास्त्री का देश में किया गया योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। इन दोनों महापुरूषों से युवाओं को प्रेरणा मिलती है। कार्यक्रम को प्रो0 आर0के0 तिवारी, प्रो0 आर0के0 सिंह, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, उप कुलसचिव विनय कुमार सिंह, पत्रकार ज्ञाप्रटे सरल एवं कर्मचारी संघ के अध्यक्ष डॉ0 राजेश सिंह ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय एकता दिवस के लिए निबंध एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

09 अक्टूबर । सरदार पटेल सेंटर फॉर नेशनल इंटीग्रेशन द्वारा सरदार पटेल जयंती एवं राष्ट्रीय एकता दिवस के परिप्रेक्ष्य में निबंध व पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में जनपद के महाराजा कालेज, के0एम0 स्कूल, झुनझुनवाला कालेज, साकेत पी0जी0 कालेज, विश्वविद्यालय परिसर के आई0ई0टी0, योग विभाग, हिन्दी–अवधी विभाग, अंग्रेजी विभाग, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, लाइब्रेरी साइंस विभाग के छात्र–छात्राओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के दिशा–निर्देशन में प्रतियोगिता आयोजित हुई।

विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी प्रो0 चयन कुमार मिश्र ने प्रतियोगिता का शुभारम्भ लाटरी के माध्यम से निबंध एवं पोस्टर का शीर्षक का चयन कर किया एवं प्रतिभागी छात्र–छात्राओं को शुभकामना दी। सेंटर के समन्वयक प्रो० शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने प्रतियोगिता के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए सरदार पटेल के अप्रतिम योगदान को याद किया। प्रो0 वर्मा ने बताया पंजीकृत कुल 280 छात्रों में से निबंध प्रतियोगिता में 133 एवं पोस्टर प्रतियोगिता में 50 छात्रों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर हिंदी विभाग के समन्वयक डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र, आंग्ल भाषा विभाग के समन्वयक डॉ0 राजेश कुशवाहा, डॉ0 अंकित मिश्र, डॉ० शैलेन वर्मा, डॉ0 शिवांश कुमार, डॉ० चन्द्रशेखर सिंह, डॉ0 रीमा सिंह, डॉ आशीष प्रजापति, डॉ० स्वाति सिंह, डॉ० प्रत्याशा मिश्र सहित अन्य मौजूद रहे।

अयोध्या वैश्विक पटल पर प्रमुख पर्यटन नगरी होगीः नगर आयुक्त

27 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय संत कबीर सभागार में विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर एम0बी0ए0 विभाग द्वारा "समावेशी विकास के लिए पर्यटन" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

व्याख्यान को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि नगर आयुक्त, अयोध्या के विशाल सिंह ने कहा कि आज के समय में व्यवस्थित पर्यटन की मांग बढ़ी है। पर्यटन उद्योग को आगे आने के साथ इस क्षेत्र से जुडे लोगों को जोड़ने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अयोध्या अध्यात्मिक पर्यटन नगरी के रूप में विकसित हो रही है आने वाले वर्षों में वैश्विक पटल पर प्रमुख पर्यटन नगरी होगी। पर्यटकों को संभालने के लिए प्रोफेशनल लोगों की आवश्यकता होगी। मुझे विश्वास है, एम0बी0ए0 विभाग पर्यटन की मांग को पूरा करने में सक्षम है। उन्होनें अंत में कहा निगम और प्राधिकरण मिलकर अयोध्या का नया रूप देने के लिए प्रयासरत हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने अपने शुभकामना सन्देश में कहा कि पर्यटन वर्तमान में एक आवश्यकता बन गई है। कोविड की मार झेलने के बाद यह उद्योग फिर से खडा होने को तैयार है। इस उद्योग को कोई भी आपदा प्रभावित नहीं कर सकती। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजेन्द्र प्रसाद, उप निदेशक, उ0प्र0 पर्यटन, अयोध्या ने कहा कि अब यह समय है कि हमें अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन पर ही निर्भर न रह कर हमें घरेलू पर्यटन पर ध्यान देना होगा, जिससे समेकित विकास होगा और स्थानीय लोगों को रोजगार भी प्राप्त होगा।

स्वागत सम्बोधन में प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह ने कहा कि 27 सितम्बर को सम्पूर्ण विश्व पर्यटन दिवस मनाता है, इस दिन को मनाने का उद्देश्य पर्यटन के प्रति लोगों को जागरूक करना है। प्रो0 सिंह ने कहा कि पर्यटन उद्योग से किसी एक का विकास नहीं होता इससे बहुविकास होता है और साथ ही साथ इस उद्योग में रोजगार की असीम संभावनाएं हैं।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन करके किया गया। अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 महेन्द्र पाल सिंह ने किया।

फेसबुक पर व्यक्तिगत और निजी जानकारी शेयर करने से बचेंः डॉ0 सिंह

25 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग में फेसबुक एवं साइबर क्राइम विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में बतौर वक्ता वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के जनसंचार विभाग के सहायक आचार्य डॉ0 दिग्विजय सिंह राठौर ने कहा कि फेसबुक उपयोग करने वाले साइबर अपराधियों के निशाने पर लगातार बने हुए हैं। इनसे बचने के लिए जागरूकता ही एकमात्र उपाय है। उन्होंने कहा कि फेसबुक पर व्यक्तिगत और निजी जानकारियों को शेयर करने से बचना चाहिए। फेसबुक पर निजी जिंदगी की शेयर की गई छोटी से छोटी जानकारी भी हमारे लिए बड़ी समस्या का कारण बन जाती है। उन्होंने कहा कि पूरे विश्व में सर्वाधिक फेसबुक यूजर भारत के हैं। बहुत सारी जानकारियों का अभाव होना साइबर अपराधियों के मकड़जाल में आसानी से उन्हें फंसा देता है। डॉ0 दिग्विजय ने कहा कि फेसबुक हैकिंग से बचने के लिए सबसे सरल उपाय यह है कि अपने मोबाइल नंबर और ईमेल आईडी को सार्वजनिक न करें। उन्होंने कहा कि साइबर अपराधियों के जाल में इंजीनियर, डॉक्टर, उच्च पदस्थ अधिकारी भी जागरूक न होने के कारण फंस जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऑनलाइन आर्थिक अपराध के सम्बन्ध में भारत सरकार द्वारा बहुत बड़े स्तर पर कार्य किया गया है। यदि किसी के साथ ऑनलाइन पैसे की धोखाधड़ी होती है तो वह तत्काल 155260 पर कॉल करके इस समस्या से निजात पाई जा सकती है।

कार्यक्रम में विभाग के समन्वयक डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने बताया वर्तमान समय में ऑनलाइन ठगी का शिकार शिक्षित वर्ग भी हो रहा है। इसके लिए हम सभी को सावधान व जागरूक रहने की आवश्यकता है। सोशल मीडिया पर निजी जानकारी साझा करने से बचें।

कार्यक्रम में विभाग के वरिष्ठ शिक्षक डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, डॉ0 आर0एन0 पाण्डेय, डॉ0 अनिल कुमार विश्वा सहित छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

गंगा की गुणवत्ता हेतु शिक्षण संस्थानों को आगे आना होगाः प्रो0 सिंह

17 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा नमामि गंगे प्रोग्राम के तहत गंगा के रीजुविनेशन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता सिविल इंजीनियरिंग आई0आई0टी0 बी0एच0यू0 के प्रो0 पी0के0 सिंह ने बताया कि गंगा कानपुर, प्रयागराज एवं वाराणसी में अधिक प्रदूषित है। गंगा नदी की गुणवत्ता को बनाए रखने हेतु सभी विश्वविद्यालय, आई0आई0टी0 एवं अन्य शिक्षण संस्थानों को आगे आना होगा। इसके लिए आम जनमानस का सहयोग भी जरूरी है। प्रो0 सिंह ने गंगा नदी के ऊपर बने विभिन्न प्रोजेक्ट के बारे में बताते हुए पारिस्थितिकी के विशेष महत्व के लिए छात्र–छात्राओं को उनकी सहभागिता के लिए उत्साहित किया। उन्होंने गंगा नदी के बेसिन प्रबंधन पर बताया कि गंगा नदी में कोलीफॉर्म काउंट तथा औद्योगिक कचरे से नदी के जल पर दुष्प्रभाव पड़ा है। इसके अतिरिक्त उन्होंने गंगा की अविरल और निर्मल धारा और नमामि गंगा के प्रमुख बिंदुओं पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पर्यावरण विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल ने बताया कि गंगा नदी को मां का दर्जा इसलिए दिया गया है क्योंकि भारत की 40 प्रतिशत जनसंख्या के जल की जरूरत गंगा नदी से पूरी करती हैं। 47 प्रतिशत कृषि क्षेत्र की सिंचाई भी इसी नदी से पूरी होती है। उद्बोधन के पूर्व प्रो0 शुक्ल ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के मार्ग–दर्शन में कार्यक्रम किया जा रहा है जिससे छात्रों को नमामि गंगा के उद्देश्यों से अवगत कराया जा सके।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की वंदना एवं कुलगीत की प्रस्तुति के साथ किया गया । अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 संजीव कुमार श्रीवास्तव ने किया। तकनीकी सहयोग राजीव कुमार द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो0 जसवंत सिंह, डॉ0 विनोद कुमार चौधरी, डॉ0 तुहिना वर्मा, डॉ0 रुद्र प्रताप सिंह, अमित मिश्रा, सौहार्द ओझा, प्रिंस पोद्दार एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं आनलाइन जुड़े रहे।

विवेकानंद समाज के सभी वर्गों के उत्थान हेतु दृढ़ संकल्पित थेः डॉ0 चैतन्य

27 सितम्बर । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के योगोपचार विभाग में 'विश्व बंधुत्व दिवस' के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता विवेक सृष्टि संस्थान, अयोध्या के निदेशक डॉ0 चैतन्य ने कहा कि स्वामी विवेकानंद समाज के सभी वर्गों के उत्थान हेतु दृढ़ संकल्पित थे। संपूर्ण विश्व मानवता को बंधुत्व के एक सूत्र में बांधने का अनवरत चिंतन व प्रयास करते रहे। उन्होंने कहा कि समर्पण ही शक्ति है। स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु के प्रति जीवन का सर्वस्व समर्पित कर दिया फलस्वरूप सृष्टि का कण–कण उनके लिए प्रेरणा व शक्ति का स्रोत बन गया। सुख की लालसा व कामना से परे होकर लक्ष्य के प्रति समर्पित हो जाए तभी जीवन की सार्थकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विभाग के निदेशक प्रो0 एस0एस0 मिश्र ने स्वामी विवेकानंद द्वारा शिकागो में दिए गए समस्त भाषणों में समाहित प्रेरणाओं की आत्मा भारतीय है किंतु यह संपूर्ण विश्व को बंधुत्व के एक सूत्र में बांधती है। विशिष्ट अतिथि डॉ0 विजय कुमार ने कहा कि वर्तमान समय में योग एक प्रभावी चिकित्सा के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। ब्लड कैंसर के उपचार हेतु अनुलोम विलोम एवं सूर्य नमस्कार के योगाभ्यास पर प्रभावी अनुसंधान हो चुके हैं।

कार्यक्रम का संचालन आलोक तिवारी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन अनुराग सोनी द्वारा किया गया। अतिथियों का स्वागत गायत्री वर्मा ने किया। इस अवसर पर डॉ0 अनिल मिश्रा, डॉ0 अनुराग पांडे, डॉ0 अर्जुन सिंह, डॉ0 कपिल राणा, डॉ0 त्रिलोकी यादव, डॉ0 मुकेश वर्मा, मोहिनी, स्वाति उपाध्याय, संघर्ष सिंह, देवेंद्र वर्मा, दिवाकर पांडेय सहित विद्यार्थियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छता के प्रति जागरुकता जरूरीः कुलपति

24 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के एम० टी० ए० विभाग द्वारा विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० रवि शंकर सिंह ने कहा कि हमारा देश हमारा गौरव है। पर्यटन को यदि बढ़ावा देना है तो बिना साफ सफाई एवं जागरुकता के संभव नहीं है। पर्यटन की दृष्टि से अयोध्या का विकास तभी संभव है जब सभी स्वच्छता के प्रति जागरुक हों।

कुलपति ने सभी छात्र–छात्राओं को स्वच्छता के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी और कहा कि एक आदर्श जीवन वही होता है जिसमें जीवन व्यवस्थित रहता है, व्यवस्थित रहने का अर्थ है सही आदतों को अपनाना। हमारे पास अथाह धन रहने के बावजूद भी अगर हमारे व्यवहार में स्वच्छता न रहे तो हमारा धन व्यर्थ है। कुलपति ने कहा कि जीवन में स्वच्छता का महत्व इतना है कि हमारे प्रधानमंत्री मोदी ने भी इसे समझते हुये स्वच्छ भारत अभियान जैसा राष्ट्रस्तरीय कार्यक्रम चलाया जिसका मुख्य उद्देश्य भारत को स्वच्छ बनाने के साथ साथ पूरी तरह खुले में शौच मुक्त बनाना है। उन्होंने कहा कि गदंगी के कारण ढेर सारी जानलेवा बीमारियां फैल रही है। इनसे बचने का सबसे अच्छा तरीका है स्वयं जागरुक रहें और दूसरों को भी जागरुक करें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलानुशासक प्रो० अजय प्रताप सिंह ने कहा कि स्वच्छता हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। स्वच्छता के बिना सफल जीवन संभव नहीं है। प्रो0 सिंह ने कहा कि शारीरिक स्वच्छता के साथ–साथ व आसपास के स्थानों की साफ–सफाई भी अति आवश्यक है। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम सभी का नैतिक कर्तव्य है कि लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करें। कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कार्यक्रम के पूर्व परिसर में नीम सहित अन्य पौधे रोपित किए।

कार्यक्रम का संचालन एम०टी०ए० विभाग के सहायक आचार्य डॉ० दिलीप कुमार सिंह ने किया। कार्यक्रम में डॉ० डी० एन० वर्मा, सरोज सिंह डॉ. शालिनी वर्मा डॉ० मोहम्मद सादिक, अनुराग सिंह, पीयूष राय, दिव्यव्रत सिंह, सुरेन्द्र प्रताप यादव, शुभम मिश्रा, अंशुमान सिंह, सौरभ मिश्रा, अखिलेश कुमार सहित बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे ।

- अवध विश्वविद्यालय में मिशन शक्ति फेज–थ्री के तहत 26 अगस्त, 2021 को महिला समानता दिवस पर महिला अध्ययन केंद्र, वीमेन ग्रीवेंस सेल तथा एक्टिविटी क्लब द्वारा अयोध्या के मसौधा में उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- आजादी का अमृत महोत्सव के क्रम में अवध विश्वविद्यालय एवं जूनियर हाईस्कूल शिवालामऊ के संयुक्त तत्वा–वधान में महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती के अवसर पर 09 अक्टूबर, 2021 को स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- मिशन शक्ति अभियान के तहत महिला अध्ययन केंद्र तथा वीमेन ग्रीवेंस एण्ड वेलफेयर सेल द्वारा 'महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्यः चुनौतियां एवं रणनीति' विषय पर 09 अक्टूबर, 2021 को वेबिनार का आयोजन किया गया।
- अवध फार्मेसी कोर्सेज के नव–प्रवेशित छात्रों का ओरिएंटेशन प्रोग्राम 13 अक्टूबर, 2021 को परिसर के संत कबीर सभागार में आयोजित किया गया।

इंजीनियरिंग में विश्वेश्वरैया का अप्रतिम योगदान है : कुलपति

15 सितंबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आईईटी संस्थान में इंजीनियर्स डे पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा 15 सितंबर 1861 को कर्नाटक में जन्मे विश्वेश्वरैया ने इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अपनी अप्रतिम योगदान एवं समर्पण से भारत में नए प्रतिमान स्थापित किए और आने वाली पीढ़ी के लिए एक बड़ी विरासत तैयार की है। कुलपति ने बताया कि उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें वर्ष 1955 में भारत का सर्वोच्च पुरस्कार ''भारत रत्न'' मिला। जल संसाधनों के प्रबंधन, नदी, बांधों एवं पुलों के निर्माण में उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि आज भारत के युवा इंजीनियर दुनिया के लिए एक नया प्रतिमान स्थापित कर रहे हैं। कुलपति ने शुभकामना व्यक्त करते हुए कहा कि आप सभी राष्ट्र निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान करें। कोविड महामारी की चुनौतियों से बचने के लिए आप सभी कुछ ऐसे नवाचार करें, जिससे एक समर्थ राष्ट्र का निर्माण हो सके।

संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने कहा कि ज्ञान के बढ़ने से ही किसी भी देश का विकास संभव है, इससे समाज के दृष्टिकोण में भी बदलाव आता हैं। पिछले दशक की तुलना में वर्तमान समय में भारतीय इंजीनियरों ने दुनिया में बेहतर प्रदर्शन किया है। विज्ञान भारती अवध प्रांत के राज्य सचिव इंजीनियर श्रेयांश ने कहा कि इंजीनियर्स न केवल पढ़ाई करके खुद का विकास करते हैं बल्कि समाज और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निवर्हन करते हैं। कार्यक्रम में संस्थान के सह–आचार्य डॉ0 सुधीर प्रकाश ने कहा विश्वेश्वरैया के द्वारा किए गए कार्य आज भी मील का पत्थर सिद्ध हुए हैं। उनके द्वारा किए गए कार्यों को शोध का विषय बनाया जा रहा है। शिक्षक रमेश मिश्र ने कहा कि इंजीनियर्स के लिए व्यावसायिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान का भी होना जरूरी है।

कार्यक्रम में संस्थान के अमितेश पंडित ने कार्यक्रम का संयोजन किया एवं संचालन शाम्भवी शुक्ला द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ0 अनूप श्रीवास्तव, डॉ0 लोकेंद्र सिंह, डॉ0 शैलेन्द्र सिंह, डॉ0 महिमा चौरसिया, मनीषा यादव, डॉ0 श्वेता कुमारी, परितोष त्रिपाठी, परिमल त्रिपाठी, दीपक कोरी सहित बड़ी संख्या में छात्र–छात्राओं की ऑनलाइन उपस्थिति रही।

शिक्षित होने से सभ्य समाज का निर्माण होगा : प्रो0 वर्मा

08 सितम्बर । अवध विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केंद्र तथा वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल द्वारा ग्राम मसौधा में साक्षरता दिवस के अवसर पर कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के दिशा–निर्देशन में जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। कार्यक्रम में महिला अध्ययन केंद्र एवं वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने ग्रामवासियों का स्वागत करते हुए कहा कि ईश्वर ने हमें जीवन प्रदान किया है, इसका भरपूर सदुपयोग करना चाहिए। प्रो0 वर्मा ने सभी उपस्थित महिलाओं से कहा कि स्वयं के साथ आस–पास के लोगों को साक्षरता के प्रति जागरूक करें तभी भारत में साक्षरता प्रतिशत बढ़ेगी। शिक्षित होने से ही एक सभ्य समाज का निर्माण होगा एवं देश का उत्थान होगा। कार्यक्रम के संयोजक डॉ0 मुकेश वर्मा ने कहा कि हमें साक्षरता दर बढ़ानी होगी। इसकी शुरुआत महिलाओं से होनी चाहिए क्योंकि एक शिक्षित महिला अपने आसपास के लोगों को भी शिक्षित कर सकती है।

महिलाएं स्वस्थ रहेंगी तो पूरा परिवार खुशहाल रहेगाः कुलपति

15 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में महिला अध्ययन केंद्र तथा वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल के संयुक्त संयोजन में राज्य सरकार द्वारा संचालित मिशन शक्ति अभियान फेज–थ्री के तहत परिसर में बालिका हेल्थ क्लब की स्थापना की गई।

क्लब का उद्घाटन एवं अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में सभी को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना चाहिए। यदि महिलाएं स्वस्थ रहेंगी तो पूरा परिवार स्वस्थ एवं खुशहाल रहेगा। कुलपति ने उपस्थित छात्राओं से कहा कि अपने घरों में ऐसा वातावरण बनाएं जिससे कि लोग स्वस्थ एवं खुशहाल रहें। कुलपति ने बताया कि इस क्लब की स्थापना का मुख्य उद्देश्य है कि यहां के अध्ययनरत छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण समय–समय पर किया जा सके।

विश्वविद्यालय चिकित्साधिकारी डॉ0 दीपशिखा ने बताया कि क्लब की स्थापना हो जाने से छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण आसानी से किया जा सकेगा। इससे छात्राओं में न्यूट्रीशन की कमी एवं अन्य बीमारियों का समय रहते इलाज मुहैया कराया जायेगा। उन्होंने छात्राओं को फर्स्ट एड किट के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम में अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने छात्राओं को बताया कि पढ़ाई के साथ–साथ स्वास्थ्य पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए पोषण युक्त भोजन लेते रहना चाहिए।

महिला अध्ययन केंद्र तथा वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है। इसलिए स्वस्थ रहना बेहद जरूरी है। महिलाओं को समय–समय पर अपने स्वास्थ्य का परीक्षण कराते रहना चाहिए। प्रो0 वर्मा ने बताया कि सभी विभागों एवं हॉस्टल को फर्स्ट एड किट का वितरण किया गया है। इस क्लब के माध्यम से अध्ययनरत छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। कैम्प में दो चरणों में परीक्षण किया गया, सुबह दस बजे से एक बजे तक और सायंकाल चार बजे से छः बजे तक किया गया।

कार्यक्रम में डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी, डॉ0 स्नेहा पटेल, डॉ0 दीक्षा दुबे, शारदा पाठक, शालिनी मिश्रा, अमरनाथ पांडे, पदमा देवी, सुनील कुमार यादव, वल्लभी तिवारी सहित अध्ययनरत छात्राओं ने हिस्सा लिया।

गांधी संज्ञा नहीं विशेषण हैः प्रो0 टेकचंदानी

04 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय द्वारा संचालित अमर शहीद संत कँवरराम साहिब सिंधी अध्ययन केंद्र द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर 'सिंधी, सिंध और गांधी' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय में सिंधी भाषा, साहित्य के प्रो0 रविप्रकाश टेकचंदानी ने कहा कि गांधी संज्ञा नहीं विशेषण है। आज भी जब कभी सत्य और अहिंसा के प्रति आग्रह रखने वाले किसी व्यक्ति का परिचय कराया जाता है, तो उन्हें गांधी विशेषण से विभूषित करते हैं। उन्होंने बताया कि महात्मा गांधी को अपनी आत्मकथा लिखने की प्रेरणा उनके यरवदा जेल जीवन के साथी जयरामदास दौलतराम से मिली थी। गांधी ने स्वदेशी और स्वराज पर पहला भाषण 1916 में सिंध में ही दिया था। इसके पूर्व महात्मा देश को समझने के लिए देशाटन कर रहे थे। प्रो0 टेकचंदानी ने बताया कि 1916 से 1934 के बीच सात बार गांधी सिंध गए और पहली सिंध यात्रा से लौटकर बम्बई में 06 मार्च, 1916 को उन्होंने पत्रकारों को बताया था कि उन्हें बम्बई से अधिक सिंध में राष्ट्रीय चेतना दिखाई दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य कुलानुशासक प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने की। स्वागत एवं आभार ज्ञापन अध्ययन केंद्र के मानद निदेशक प्रो0 आर0 के0 सिंह एवं सफल संचालन मानद सलाहकार ज्ञानप्रकाश टेकचंदानी 'सरल' ने किया।

अयोध्या दीपोत्सव एक वैश्विक प्रतीक बन गया हैः कुलपति

24 सितम्बर। अवध विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में पर्यटन विभाग, उत्तर प्रदेश एवं अवध विश्वविद्यालय के संयुक्त संयोजन दीपोत्सव–2020 के विशिष्ट योगदानकर्ताओं के सम्मान में सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि अयोध्या दीपोत्सव एक वैश्विक प्रतीक बन गया है। अयोध्या दीपोत्सव एक सामूहिक प्रयासों का प्रतिफल है। कुलपति ने कहा कि दीपोत्सव के सफल आयोजन के लिए गठित विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय की टीमें दिन रात एक कर आयोजन को सफल बनाती है। इसके लिए बड़े स्तर पर रूपरेखा बनानी पड़ती है। इस बार भी पिछले दीपोत्सव के रिकार्ड को तोड़ते हुए एक बड़े लक्ष्य तक पहुंचना है तथा नया कीर्तिमान स्थापित करना है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिलाधिकारी अनुज कुमार झा ने कहा कि कई विभागों के सहयोग से ही दिव्य दीपोत्सव भव्य बन पाया है। दीपोत्सव कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है। उन्होंने कहा कि अयोध्या दीपोत्सव अब एक ब्रांड बन गया है। इसे अब और बेहतर बनाने का अवसर है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलेश कुमार पाण्डेय ने कहा कि दीपोत्सव जैसे बड़े आयोजन के लिए प्रबंधन की व्यवस्था करना चुनौतीपूर्ण रहता है। सुरक्षा व्यवस्था से लेकर ट्रैफिक प्रबंधन में पुलिस प्रशासन को सक्रियता से कार्य करना होता है। इतने कम समय में दीपोत्सव के आयोजन को सफल बनाने में छात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

विशिष्ट अतिथि अयोध्या की मुख्य विकास अधिकारी अनीता यादव ने कहा दीपोत्सव एक बड़े पर्व की तरह है। सभी लोगों को टीम वर्क के साथ उत्साह पूर्वक कार्य करना है।

कार्यक्रम में कुलसचिव उमानाथ ने कहा कि दीपोत्सव कार्यक्रम एक महायज्ञ है। 2021 का दीपोत्सव काफी बड़ा लक्ष्य है। इसमें सभी के सहयोग से लक्ष्य को प्राप्त करना है।

कार्यक्रम में दीपोत्सव नोडल अधिकारी प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने कहा कि कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के मागदर्शन में 12 हजार स्वयंसेवकों के साथ पुनः रिकॉर्ड बनाया जायेगा। दीपोत्सव–2020 में शामिल योगदानकर्ताओं तथा विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालय व स्वयंसेवी संस्थाओं के समन्वयकों को कुलपति, मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने किया एवं धन्य–वाद ज्ञापन अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के शिक्षक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

डिजिटल मीडिया का क्षितिज काफी बड़ा हो गया हैः डॉ0 मिश्र

29 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के जनसंचार और पत्रकारिता विभाग में 'बाजारवाद व मीडिया' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ0 मनोज मिश्र ने मीडिया के बदलते स्वरूप पर कहा कि इंटरनेट के आने के बाद मीडिया का स्वरूप बदल गया है। बाजार पर इसका सर्वाधिक असर देखा जा रहा है। इंटरनेट ने विश्व व्यवस्था को संगठित कर संभावनाओं और व्यवसाय के द्वार खोल दिए हैं। परंपरागत मीडिया को इस प्रतियोगिता में कड़ा मुकाबला करना पड़ेगा। डॉ0 मिश्र ने कहा कि वर्तमान समय डिजिटल युग के रूप में देखा जा रहा है। वेब पत्रकारिता के बढ़ते असर से मीडिया अछूता नहीं रह गया है। इसने व्यापारिक संभावनाओं के अवसर जरूर पैदा कर दिए हैं परंतु निजता पर अतिक्रमण के साथ–साथ साइबर अपराध को पैर पसारने का अवसर प्रदान कर दिया है। कोविड–19 के प्रभाव के कारण डिजिटल मीडिया का क्षितिज काफी बड़ा हो गया है। डॉ0 मिश्र ने बताया कि अब दुनिया मोबाइल जर्नलिज्म मोजो की तरफ बढ़ चुकी है। भारत में 100 करोड़ से अधिक लोगों के पास इंटरनेट युक्त मोबाइल है ऐसी स्थिति में बाजारवाद का स्वरूप नए अवसरों को जन्म दे रहा है। दूरदराज क्षेत्रों में रह रहे लोग अपने हुनर का उपयोग वैश्विक पटेल प्लेटफार्म पर व्यवसाय कर आर्थिक अर्जन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश में बढ़ते साइबर जगत में सावधानी बेहद आवश्यक है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए समन्वयक डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने कहा कि वर्तमान में सोशल मीडिया के प्लेटफार्म का उपयोग करते समय सावधानी के साथ जागरूकता भी आवश्यक है। विभाग के शिक्षक डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, डॉ0 राजनरायन पाण्डेय एवं डॉ0 अनिल कुमार विश्वा ने अतिथि का स्वागत अंगवस्त्रम एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर किया।